

III. बाह्य अर्थव्यवस्था

वैश्विक सुधार की मजबूती संबंधी हाल की चिंता से बाह्य मांग की स्थिति प्रभावित होनी शुरू होने से मजबूत देशी वृद्धि का प्रभाव 2010-11 की पहली तिमाही में उच्च चालू खाता घाटे के रूप में दिखा। जहां उच्च चालू खाता घाटे के माध्यम से विदेशी पूंजी के बेहतर अवशोषण से विनिमय दर पर अधिशेष पूंजी प्रवाह का प्रभाव सीमित रहा, वहीं सकारात्मक मुद्रास्फीति विभेद की निरंतरता निर्यात की प्रतिस्पर्धात्मकता पर दबाव का स्रोत बनी रही। इसके अलावा, पूंजी के अंतर्वाह के मजबूत अवशोषण के बावजूद, अमरीकी डॉलर के प्रति रुपए की सांकेतिक विनिमय दर बढ़ गई।

अंतरराष्ट्रीय गतिविधियां

III.1 वैश्विक अर्थव्यवस्था 2009 में दर्ज -0.6 प्रतिशत वृद्धि से सुधरकर 2010 में 4.8 प्रतिशत हो जाने का अनुमान है। किंतु, यह समग्र संभावना देशों और 2010 की दो छमाहियों के बीच गति और स्वरूप में भारी विचलन को छिपा देती है। आइएमएफ के अनुसार, उन्नत देशों में वृद्धि पहली छमाही के 3.5 प्रतिशत से कम होकर दूसरी छमाही में 1.75 प्रतिशत रह जाने की संभावना है। उभरती और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में भी वृद्धि की गति पहली छमाही के 8 प्रतिशत से कम होकर दूसरी छमाही में 6.25 प्रतिशत रह जाने की संभावना है। अस्थायी मंदी भी 2011 की पहली छमाही तक बनी रहने की संभावना है।

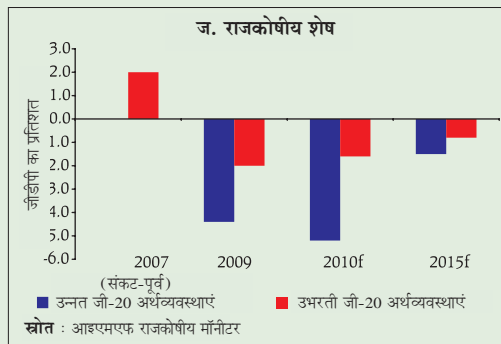
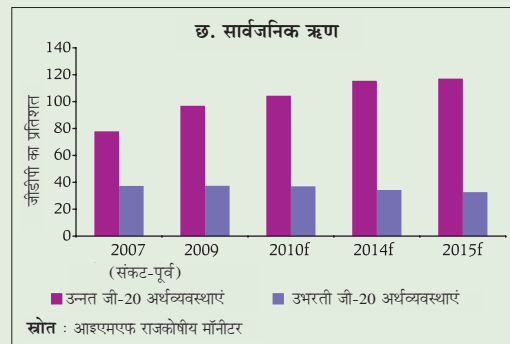
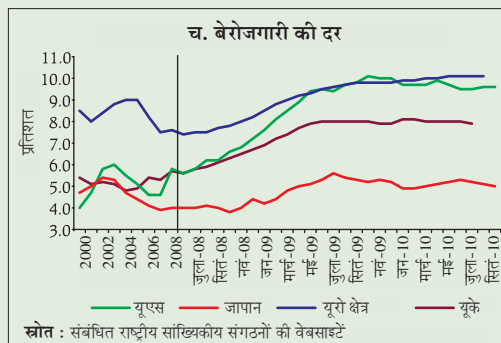
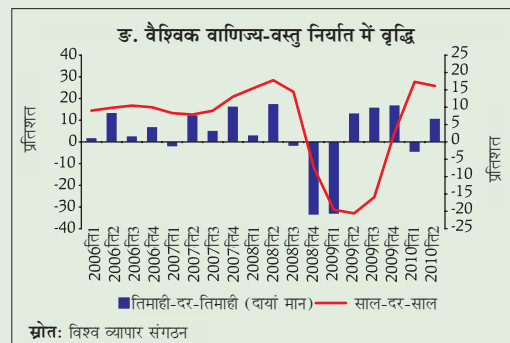
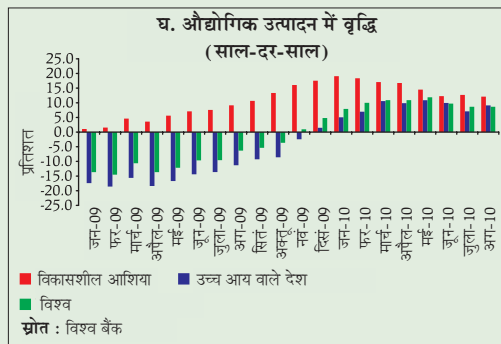
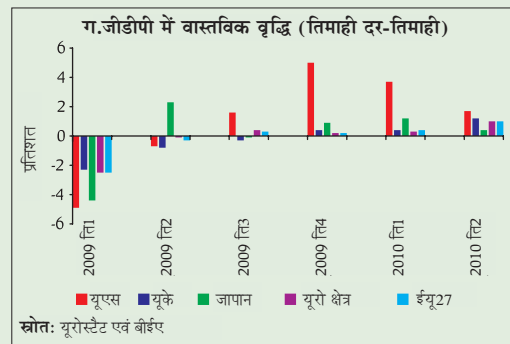
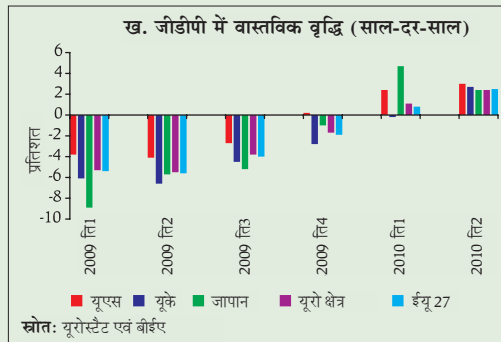
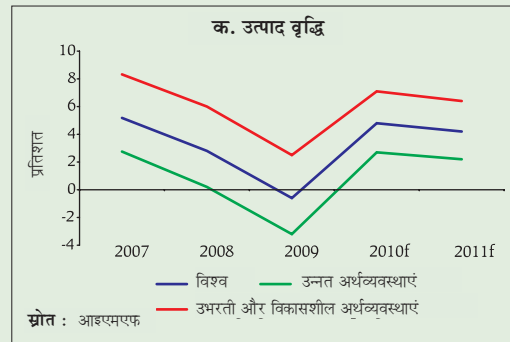
III.2 वैश्विक सुधार की गति वर्ष की दूसरी छमाही में कम हो गई जिसमें उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में और

विशेष रूप से अमरीका और जापान में सुधार की गति काफी कम होने लगी (चार्ट III.1 ख और ग)। वैश्विक औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि भी मार्च 2010 में शीर्ष पर पहुंचने के बाद कम होने लगी (चार्ट III.1 घ)। किंतु, उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं (ईएमई) ने मजबूत वृद्धि बनाए रखी और परिणामस्वरूप, वृद्धि में अंतर और बढ़ गया। जहां उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में आर्थिक गतिविधियों में संकुचन का अन्य अल्प चरण, अर्थात् दोगुनी गिरावट का भय कम हो गया है, वहीं कमजोर वृद्धि से अपस्फीति और उच्च बेरोजगारी दर संबंधी चिंता फिर से आ गई है (चार्ट III.1 च)। राजकोषीय प्रोत्साहन उस सीमा तक बढ़ने की संभावना के चलते, जहां सरकारी जोखिम वृद्धि में सुधार के लिए हानिकारक हो सकती है, उन्नत अर्थव्यवस्थाओं के अनेक केंद्रीय बैंकों ने अतिरिक्त निभावी मौद्रिक नीति रुझान के संभाव्य प्रयोग का संकेत दिया (चार्ट III.1 छ और ज)। उत्पादन से भिन्न, व्यापार गतिविधियों में काफी सुधार हुआ और इसकी गति भी बनी रही (चार्ट III.1 ड)। इसे दर्शाते हुए, डब्ल्यूटीओ ने वणिक माल व्यापार की मात्रा का अपना अनुमान सुधारते हुए 10.0 प्रतिशत से बढ़ाकर 2010 के लिए 13.5 प्रतिशत कर दिया जो कि व्यापार में अब तक का सबसे तेज वर्ष-दर-वर्ष विस्तार होगा। किंतु, इस उच्च वृद्धि को निम्न आधार के संदर्भ में देखना होगा जो कि 2009 में हुए 12.2 प्रतिशत के तेज संकुचन से उभरा था। इसके अलावा, 2010 की पहली छमाही में वणिक माल व्यापार का मूल्य 25 प्रतिशत बढ़ने के बावजूद, गतिविधियों का स्तर अब भी संकट-पूर्व स्तर से कम ही है। कम देशी मांग के कारण कुछ देशों में संरक्षणवाद और कम विनिमय दरों का सहारा लेने के चिह्न दिख रहे हैं जो समग्र वैश्विक सुधार को बाधित करेंगे। सामान्य

बेरोजगारी की स्थिति अच्छी नहीं रही और रोजगार गहनता वाला सुधार वैश्विक नीति की प्रमुख चुनौती बना हुआ है। युवाओं के लिए वैश्विक रोजगार प्रवृत्ति के आइएलओ के अगस्त 2010 के आकलन के अनुसार, युवाओं (15 से 24 का आयु समूह) में वैश्विक बेरोजगारी 2007 के 11.9 प्रतिशत से बढ़कर 2009 में 13.0 प्रतिशत हो गई जो 2010 में और बढ़कर 13.1 प्रतिशत होने की संभावना है। आइएमएफ के अनुसार, 2007 से बेरोजगारी में 30 मिलियन वृद्धि हुई है जिसका तीन चौथाई भाग उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में है।

III.3 एडीबी के सितंबर 2010 आकलन के अनुसार, विकासशील एशिया में मजबूत सुधार के बाद इसकी गति बनी रही और यह 2010 में 8.2 प्रतिशत की दर से बढ़ने की आशा है जबकि 2009 में यह दर 5.4 प्रतिशत थी। देशी मांग और निर्यात दोनों में सुधार से इस निष्पादन में सहयोग मिला है। कम आधार के लाभों की समाप्ति, नीतिगत प्रोत्साहन में कटौती और वर्ष की दूसरी छमाही में उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में कमजोर वृद्धि वृद्धि के लिए प्रमुख अधोमुखी जोखिम है। तेज देशी मांग और बढ़ते पण्य मूल्यों से मुद्रास्फीति के लिए जोखिम हो सकती है। आइआइएफ ने ईएमई को निजी पूंजी प्रवाह का अपना आकलन अक्टूबर 2010 में बढ़ाया और इसे अपने अप्रैल अनुमान से बढ़ाकर 116 बिलियन अमरीकी डॉलर किया। ईएमई को 2010 में अनुमानित पूंजी प्रवाह 2009 के 581 बिलियन अमरीकी डॉलर की तुलना में 825 बिलियन अमरीकी डॉलर पर काफी अधिक होंगे। वैश्विक वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट, अक्टूबर 2010 के अनुसार उच्च वृद्धि की संभावना और ईएमई में मजबूत आधार तत्व उन्नत अर्थव्यवस्थाओं से ढांचागत आस्ति पुनर्आबंटन की ओर संकेत करते हैं जो संविभागीय पूंजी

चार्ट III.1: प्रमुख वैश्विक संकेतक



प्रवाहों में अस्थिरता बढ़ा सकते हैं और उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं में स्थानीय बाजार मूल्यन पर दबाव ला सकते हैं।

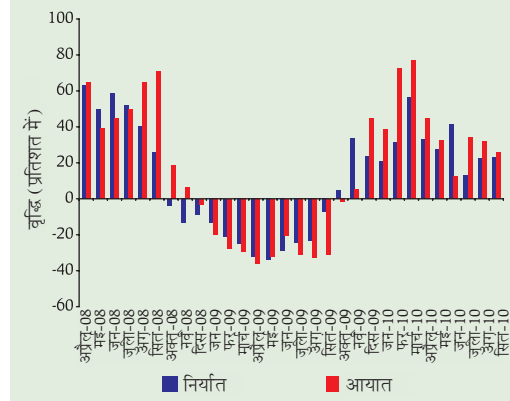
III.4 हाल की अस्थिर बाह्य गतिविधियां दर्शाती है कि नीति के प्रयोजनार्थ भारतीय अर्थव्यवस्था और वित्तीय प्रणाली पर उनके प्रत्यक्ष और परोक्ष प्रभाव का निरंतर आकलन करना होगा और संवेदनशीलता का कोई भी चिह्न दिखने पर उपयुक्त सुधारात्मक नीतिगत कार्रवाई करनी होगी। उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में वृद्धि में भिन्नता से भारत में व्यापार असंतुलन होगा जिसके प्रति संरक्षणवाद और अन्य देशों की विनिमय दर नीतियों से जोखिम को पहचानना होगा। ईएमई को पूंजी प्रवाह की समग्र आशादायी संभावना से पता चलता है कि मजबूत देशी वृद्धि की संभावना और मौद्रिक नीति के सुविचारित सामान्यीकरण के बाद बढ़ते ब्याज दर अंतर के कारण 2010-11 में सकल पूंजी अंतर्वाह कुछ माह पहले के अनुमान से अधिक होगा।

वणिक माल व्यापार

निर्यात

III.5 भारत का वणिक माल निर्यात, जिसने 2009-10 की अंतिम तिमाही में मजबूत सुधार दर्शाया था, ने चालू वित्तीय वर्ष के दौरान उच्च वृद्धि दर्शाना जारी रखा (चार्ट III.2)। 2009-10 की चौथी तिमाही के दौरान 36.4 प्रतिशत वृद्धि दर्ज करने के बाद, निर्यात वृद्धि इस वर्ष अप्रैल-सितंबर में कम होकर 27.6 प्रतिशत रह गई। किंतु, भारत

चार्ट III.2: भारत का वाणिज्य-वस्तु व्यापार

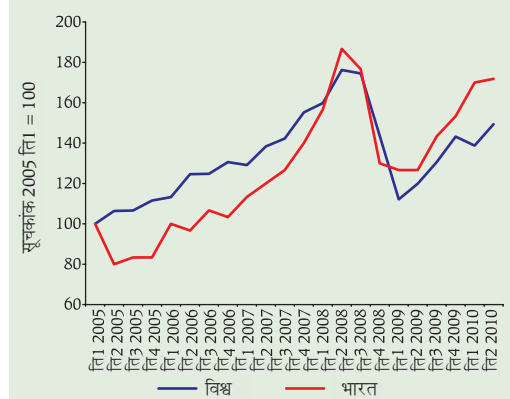


का निर्यात निष्पादन समग्र वैश्विक प्रवृत्ति से बेहतर बना रहा (चार्ट III.3)।

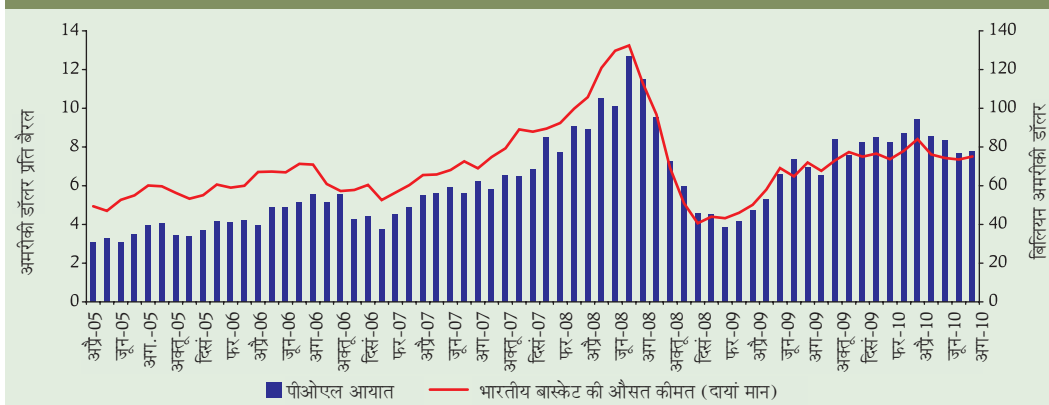
आयात

III.6 मजबूत देशी वृद्धि संबंधी मांग दर्शाते हुए, आयात उच्च गति से बढ़े, हालांकि वर्ष के दौरान अब तक इसमें कुछ अस्थिरता थी। तेल आयात ने 2010-11 की पहली तिमाही के दौरान 54.8 प्रतिशत वृद्धि दर्ज की जिसका कारण पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में अंतरराष्ट्रीय कच्चे तेल के उच्च मूल्यों के साथ

चार्ट III.3: भारत बनाम विश्व के वाणिज्य-वस्तु निर्यात



चार्ट III.4: भारत का पीओएल आयात तथा कच्चे तेल की अंतरराष्ट्रीय कीमतें



ही मात्रा में वृद्धि था (चार्ट III.4)। तेल से भिन्न आयात अप्रैल-अगस्त 2010 के दौरान 33.7 प्रतिशत बढ़े जो मजबूत देशी मांग की स्थिति दर्शाते हैं।

भुगतान संतुलन

चालू खाता

III.7 तेल और इससे भिन्न के आयात में निर्यात की तुलना में तेज वृद्धि से अप्रैल-सितंबर 2010 के दौरान वणिक माल व्यापार घाटा बढ़कर 63.2 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गया जो कि पिछले वर्ष की इसी अवधि में 46.9 बिलियन अमरीकी डॉलर था (सारणी III.1)।

III.8 भारत में मजबूत वृद्धि और उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में कमजोर सुधार का अंतर बना रहने का प्रभाव चालू खाते के घाटे में दिख रहा था जो कि 2010-11 की पहली तिमाही में पिछले वर्ष की इसी तिमाही की तुलना में बढ़ गया था (सारणी III.2)।

सारणी III.1: भारत का वाणिज्य-वस्तु व्यापार

	अप्रैल-मार्च		अप्रैल-सितंबर			
	2009-10 अ		2009-10 सं		2010-11 अ	
	पूर्ण	वृद्धि (%)	पूर्ण	वृद्धि (%)	पूर्ण	वृद्धि (%)
1	2	3	4	5	6	7
निर्यात	178.7	-3.6	80.9	-25.7	103.3	27.6
तेल	28.1	2.1	10.8	-42.5
गैर तेल	150.5	-4.6	70.2	-22.2
आयात	286.8	-5.6	127.8	-30.9	166.5	29.9
तेल	87.1	-7.0	37.5	-40.8	40.7*	31.7*
गैर तेल	199.7	-4.9	90.4	-25.8	101.2*	33.7*
व्यापार शेष	-108.2	-8.6	-46.9	-38.4	-63.2	34.8
गैर तेल व्यापार शेष	-49.2	-5.9	-20.2	-36.0

सं: संशोधित. अ: अनंतिम. .. उपलब्ध नहीं है. *: अप्रैल-अगस्त से संबंधित आंकड़े

स्रोत: वाणिज्यिक आसूचना और सांख्यिकी महानिदेशालय.

सारणी III.2: भारत का भुगतान संतुलन

(बिलियन अमरीकी डॉलर)

	2008-09 अप्रैल- मार्च आंसं	2009-10 अप्रैल- मार्च प्रा	2009-10				2010-11 अप्रैल- जून प्रा
			अप्रैल- जून आंसं	जुला.-सित. आंसं	अक्तू.-दिस. आंसं	जन-मार्च प्रा	
1	2	3	4	5	6	7	8
1. निर्यात	189.0	182.2	39.2	43.5	47.1	52.4	53.7
2. आयात	307.7	299.5	64.8	72.6	78.1	83.9	87.9
3. व्यापार शेष (1-2)	-118.7	-117.3	-25.6	-29.1	-31.1	-31.5	-34.2
4. शुद्ध अदृश्य मदें	89.9	78.9	21.2	20.4	18.9	18.5	20.5
5. चालू खाता शेष (3+4)	-28.7	-38.4	-4.5	-8.8	-12.2	-13.0	-13.7
6. सकल पूंजी अंतर्वाह	312.4	344.0	77.1	95.4	81.3	90.2	95.3
7. सकल पूंजी बहिर्वाह	305.2	290.4	73.1	76.6	66.6	74.1	76.9
8. शुद्ध पूंजी खाता (6-7)	7.2	53.6	4.0	18.8	14.7	16.1	18.4
9. समग्र शेष (5+8)#	-20.1	13.4	0.1	9.4	1.8	2.1	3.7

ज्ञापन:

i. निर्यात वृद्धि (%)	13.7	-3.6	-31.8	-18.9	19.3	36.2	37.2
ii. आयात वृद्धि (%)	19.4	-2.7	-21.7	-21.7	6.3	43.0	35.7
iii. व्यापार संतुलन (जीडीपी (%) के रूप में)	27.7	-31.1	-3.1	-47.4	-40.8	-24.5	-3.0
iv. अदृश्य मदों में निवल वृद्धि (%)	18.7	-12.2	-3.7	-23.3	-15.6	-2.6	-3.4
v. विदेशी मुद्रा भंडार (अवधि के अंत में)	252.0	279.1	265.1	281.3	283.5	279.1	275.7

प्रा: प्रारंभिक। आंसं: आंशिक रूप से संशोधित।
#: भूल चूक शामिल।

भुगतान संतुलन आधार पर व्यापार घाटा 2010-11 की पहली तिमाही में 34.2 बिलियन अमरीकी डॉलर था जो कि 2009-10 की इसी अवधि के 25.6 बिलियन अमरीकी डॉलर से अधिक था।

अदृश्य मदें

III.9 अदृश्य मदों के खाते (जिसमें सेवा, आय और अंतरण शामिल हैं) में भारत का निवल अधिशेष पिछले वर्ष की तुलना में 2010-11 की पहली तिमाही के दौरान कम हो गया जिसका मुख्य कारण सेवा भुगतान में मजबूत वृद्धि और निवेश आय प्राप्तियों में गिरावट था। अप्रैल-जून 2010 के दौरान सेवा निर्यात में वृद्धि (22.5 प्रतिशत) का मुख्य कारण यात्रा से संबंधित सेवाओं के अलावा परिवहन और विविध सेवाओं, जैसे सॉफ्टवेयर, कारोबार

और वित्तीय सेवाएं, में वृद्धि था जो कि सेवा भुगतान, विशेष रूप से परिवहन, कारोबार और वित्तीय सेवाओं में व्यापक विस्तार से संतुलित हो गया था। परिणामस्वरूप, सेवा खाते में 3.0 प्रतिशत की निवल गिरावट हुई। अदृश्य मद अधिशेष ने तिमाही के दौरान लगभग 60.0 प्रतिशत के व्यापार घाटे का वित्तपोषण किया जबकि पिछले वर्ष की इसी तिमाही में यह 83.0 प्रतिशत था (सारणी III.3)।

पूंजी खाता

III.10 2010-11 की पहली तिमाही में पूंजी खाते में निवल अधिशेष पिछली दो तिमाहियों और चालू खाते की आवश्यकता से अधिक था (सारणी III.4)। हाल के महीनों के दौरान पूंजी प्रवाहों के विभिन्न घटकों में संरचनात्मक बदलाव हुआ। विदेशी निवेश, जो कि पूंजी खाते का

सारणी III.3: अदृश्य मदों की सकल प्राप्तियां और भुगतान

(बिलियन अमरीकी डॉलर)

	अदृश्य मदों की प्राप्तियां				अदृश्य मदों का भुगतान			
	अप्रैल-मार्च		अप्रैल-जून		अप्रैल-मार्च		अप्रैल-जून	
	2008-09 आंसं	2009-10 प्रा	2009-10 आंसं	2010-11 प्रा	2008-09 आंसं	2009-10 प्रा	2009-10 आंसं	2010-11 प्रा
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1. यात्रा	10.9	11.9	2.3	3.0	9.4	9.3	2.0	2.3
2. दुलाई	11.3	11.1	2.5	3.1	12.8	11.9	2.8	3.1
3. बीमा	1.4	1.6	0.4	0.4	1.1	1.3	0.3	0.3
4. सरकारी, अन्यत्र शामिल नहीं	0.4	0.4	0.1	0.1	0.8	0.5	0.1	0.1
5. विविध	77.7	68.7	16.0	19.6	27.9	36.5	5.7	10.2
जिसमें से:								
सॉफ्टवेयर	46.3	49.7	11.0	12.7	2.8	1.5	0.4	0.6
गैर सॉफ्टवेयर	31.4	19.0	5.0	6.9	25.1	35.0	5.3	9.6
6. अंतरण	47.5	54.4	13.3	13.8	2.7	2.3	0.5	0.7
जिसमें से:								
निजी अंतरण	46.9	53.9	13.3	13.7	2.3	1.8	0.4	0.6
7. आय	14.3	13.0	3.0	2.9	18.8	20.4	5.0	5.5
निवेश आय	13.5	12.1	2.7	2.6	17.5	18.7	4.7	5.0
कर्मचारियों के क्षतिपूर्ति	0.8	0.9	0.2	0.2	1.3	1.7	0.4	0.5
कुल (1 से 7)	163.5	161.2	37.6	42.7	73.6	82.3	16.4	22.3

प्रा: प्रारंभिक. आंसं: आंशिक रूप से संशोधित

महत्वपूर्ण घटक रहा है, ने कुछ कमी दर्शाई जिसका मुख्य कारण विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (एफडीआइ) अंतर्वाहों में मंदी था। तिमाही के दौरान एफआईआइ के निवल अंतर्वाह भी कम थे। एफआईआइ, जो कि पारंपरिक रूप से इक्विटी

सारणी III. 4: निवल पूंजी प्रवाह

(बिलियन अमरीकी डॉलर)

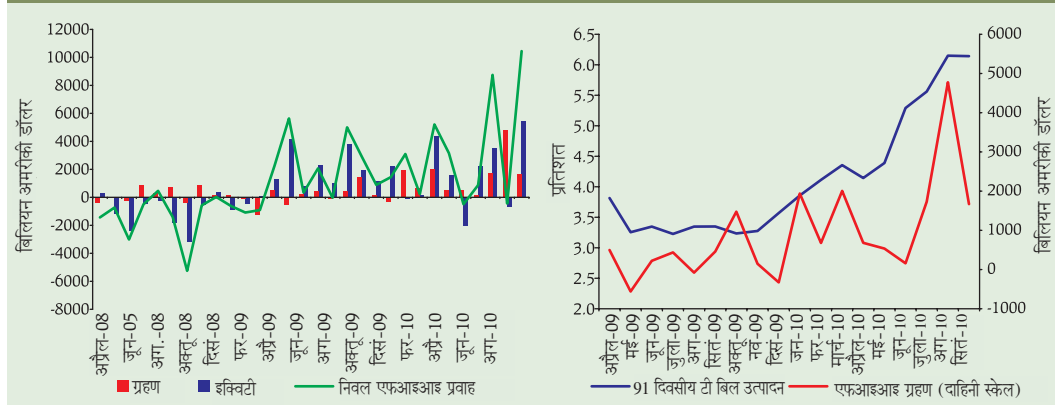
	2008-09	2009-10	2009-10				2010-11
	अप्रैल-मार्च आंसं	अप्रैल-मार्च प्रा	अप्रैल-जून आंसं	जुला.-सित. आंसं	अक्तू.-दिस. आंसं	जन.-मार्च आंसं	अप्रैल-जून प्रा
1	2	3	4	5	6	7	8
1. प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआइ)	17.5	19.7	6.1	6.5	3.9	3.2	3.2
आवक एफडीआइ	35.0	31.7	8.7	10.7	7.1	5.1	6.0
जावक एफडीआइ	17.5	12.0	2.6	4.2	3.2	1.9	2.8
2. पोर्टफोलियो निवेश	-14.0	32.4	8.3	9.7	5.7	8.8	4.6
जिसमें से:							
एफआईआइ	-15.0	29.0	8.2	7.0	5.3	8.5	3.5
एडीआर / जीडीआर	1.2	3.3	0.04	2.7	0.5	0.1	1.1
3. बाह्य सहायता	2.6	2.0	0.1	0.5	0.6	0.8	2.3
4. बाह्य वाणिज्यिक उधार	7.9	2.5	-0.5	1.2	1.7	0.1	2.7
5. अनिवासी भारतीय जमाशियां	4.3	2.9	1.8	1.0	0.6	-0.6	1.1
6. अनिवासी भारतीय जमाशियों को छोड़कर बैंकिंग पूंजी	-7.5	-0.8	-5.2	3.4	1.3	-0.4	2.9
7. अल्पावधि व्यापार कर्ज	-1.9	7.7	-1.5	0.8	3.3	5.0	5.6
8. रुपया ऋण सेवा	-0.1	-0.1	-0.02	-	-	-0.1	-0.02
9. अन्य पूंजी	-1.5	-12.7	-5.2	-4.3	-2.4	-0.9	-3.9
कुल (1 से 9)	7.2	53.6	4.0	18.8	14.7	16.1	18.4

प्रा: प्रारंभिक।

आंसं: आंशिक रूप से संशोधित।

- : नगण्य।

चार्ट III.5: निवल एफआइआइ निवेशों में हाल की प्रवृत्तियां



बाजार में निवेश करती थीं, ने ऋण बाजारों में निवेश से विविधता की शुरुआत की (चार्ट III.5)। ऋण बाजारों के आकर्षण का कारण भारत में बढ़ता ब्याज दर माहौल और विस्तारित अवधि में लगभग शून्य ब्याज दर की स्थिति हो सकता है। प्रमुख बुनियादी सुविधाओं के विकास में सहायता देने, ऊर्जा की अधिकता वाले क्षेत्रों से इसे इसकी कमी वाले क्षेत्रों में अंतरित करना सुगम बनाने और सार्वजनिक सेवाओं की गुणवत्ता सुधारने की दृष्टि से, तिमाही के दौरान भारत को बाह्य सहायता के रूप में व्यापक विदेशी पूंजी प्राप्त हुई। मजबूत देशी मांग और बढ़ते ब्याज दर अंतर ने भी तिमाही के दौरान बाह्य वाणिज्यिक उधार (ईसीबी) के निवल अंतर्वाह बढ़ा दिए। भारत को अल्पावधि व्यापार कर्ज में 2010-11 की पहली तिमाही में 5.6 बिलियन अमरीकी डॉलर का भारी निवल अंतर्वाह दर्ज किया (2009-10 की इसी तिमाही के दौरान यह 1.5 बिलियन अमरीकी डॉलर था) जो कि मजबूत देशी आर्थिक गतिविधियों और वैश्विक वित्तीय बाजारों में स्थिति में सुधार के अनुरूप था। बैंकिंग पूंजी ने तिमाही के दौरान 4.0 बिलियन अमरीकी डॉलर का अंतर्वाह दर्ज किया जिसका मुख्य कारण बैंकों के बाह्य विदेशी मुद्रा उधार और

एनआरआइ जमाराशियों के तहत निवल अंतर्वाह थे। तिमाही के दौरान कर्ज का प्रवाह लगभग 12 बिलियन अमरीकी डॉलर था जो कुल निवल पूंजी प्रवाहों का लगभग 64 प्रतिशत था।

III.11 2010-11 की अवधि में अब तक के पूंजी प्रवाहों के कतिपय प्रमुख संकेतकों पर उपलब्ध सूचना एफडीआई और एनआरआइ जमाराशियों के रूप में अंतर्वाहों में कुछ कमी किंतु एफआइआइ और ईसीबी के तहत के व्यापक निवल अंतर्वाह दर्शाती है (सारणी III.5)। कर्ज के प्रवाह, विशेष रूप से ईसीबी, जो कि ब्याज दर विभेद के प्रति संवेदनशील

सारणी III.5 : 2010-11 में अब तक पूंजीगत प्रवाह

(बिलियन अमरीकी डॉलर)			
संघटक	अवधि	2009-10	2010-11
1	2	3	4
भारत में आने वाली एफडीआई	अप्रैल-सितंबर	17.8	13.5
इफआईआई (नेट)	अप्रैल-अक्टूबर 22	18.9	51.0
एडीआर/जीडीआर	अप्रैल-सितंबर	2.7	1.6
ईसीबी अनुमोदन	अप्रैल-सितंबर	7.2	10.6
एनआरआइ जमा (निवल)	अप्रैल-सितंबर	2.9	2.2

एफडीआई : विदेशी प्रत्यक्ष निवेश
इफआईआई : विदेशी संस्थागत निवेशक
ईसीबी : बाह्य वाणिज्यिक उधार
एनआरआइ : आप्रवासी भारतीय
एडीआर : अमरीकी डिपॉजिटरी प्राप्तियां
जीडीआर : वैश्विक डिपॉजिटरी प्राप्तियां

होते हैं, उच्च रहे हैं। एफआइआइ प्रवाह वर्ष के दौरान अब तक अस्थिर रहे हैं। उन्होंने मई 2010 में निवल बहिर्वाह दर्ज किए किंतु 8.8 बिलियन अमरीकी डॉलर का निवल अंतर्वाह दर्ज करते हुए जुलाई में मजबूत सुधार दर्ज किया। पुनः, अगस्त 2010 में निवल बहिर्वाह दर्ज हुए जिसके बाद सितंबर 2010 में 10.5 बिलियन अमरीकी डॉलर के निवल अंतर्वाह दर्ज हुए। अक्टूबर में (22 अक्टूबर 2010 तक) अंतर्वाह बढ़कर 28.7 बिलियन अमरीकी डॉलर के रेकार्ड स्तर पर पहुंच गए जिन्होंने पूंजी बाजार में आए आइपीओ में अधिक अभिदान दर्शाया। इस संदर्भ में, यह उल्लेखनीय है कि अन्य अनेक एशियाई ईएमई में भारी पूंजी अंतर्वाह होने के बावजूद, भारत में चालू खाता घाटा है जबकि अन्य अनेक एशियाई अर्थव्यवस्थाओं में चालू खाते में अधिदेश था।

विदेशी मुद्रा भंडार

III.12 निवल पूंजी प्रवाह चालू खाते के घाटे से अधिक होने के कारण भारत का विदेशी मुद्रा भंडार (मूल्यन प्रभाव छोड़कर) 2010-11 की पहली तिमाही के दौरान 3.7 बिलियन अमरीकी डॉलर बढ़ा जबकि पिछले वर्ष की इसी अवधि में यह 0.1 बिलियन अमरीकी डॉलर ही बढ़ा था। प्रमुख अंतरराष्ट्रीय मुद्राओं के प्रति अमरीकी डॉलर में मूल्यवृद्धि के कारण हुई मूल्यन हानि अप्रैल-जून 2010 के दौरान लगभग 7 बिलियन अमरीकी डॉलर होने के कारण विदेशी मुद्रा भंडार के बकाया स्तर में 3.3 बिलियन अमरीकी डॉलर की कमी आई। 22 अक्टूबर 2010 को भारत का विदेशी मुद्रा भंडार 295.4 बिलियन अमरीकी डॉलर था (सारणी III.6)।

रुपए की वास्तविक प्रभावी विनिमय दर

III.13 6 मुद्राओं और 36 मुद्राओं के वास्तविक प्रभावी विनिमय दर (रीअर) सूचकांक ने 2009-10 में काफी

सारणी III.6: विदेशी मुद्रा भंडार का संघटन

(मिलियन अमरीकी डॉलर)					
माह	सोना	एसडी आर	विदेशी मुद्रा आस्तियां	आइएमएफ में रिजर्व स्थिति	कुल (2+3+4+5)
1	2	3	4	5	6
मार्च-09	9,577	1	241,426	981	251,985
मार्च-10	17,986	5,006	254,685	1,380	279,057
अप्रै.-10	18,537	4,982	254,773	1,341	279,633
मई-10	19,423	4,861	247,951	1,309	273,544
जून-10	19,894	4,875	249,628	1,313	275,710
जुला. 10	19,278	5,006	258,551	1,348	284,183
अग. 10	20,008	4,974	256,227	1,932	283,142
सितं. 10	20,516	5,130	265,231	1,993	292,870
अक्तू. 10#	20,516	5,178	267,694	2,012	295,399

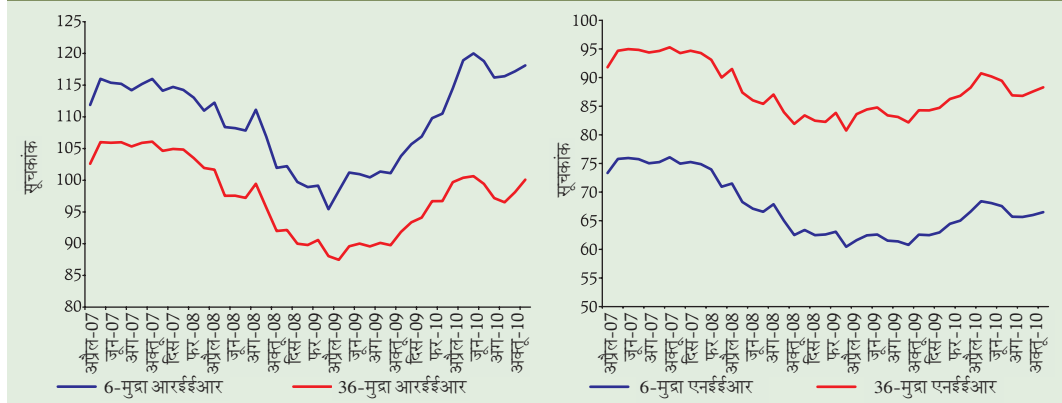
: 22 अक्टूबर 2010 की स्थिति के अनुसार

वृद्धि दर्शाई। 2010-11 के दौरान अब तक (अप्रैल-22 अक्टूबर, 2010), 6 मुद्राओं के रीअर ने 36 मुद्राओं के रीअर की तुलना में अधिक वृद्धि दर्ज की (चार्ट III.6 और सारणी III.7)। 36 मुद्राओं के रीअर में भारत का लगभग 90 प्रतिशत विदेशी व्यापार कवर होता है। यदि सकारात्मक मुद्रास्फीति विभेद बना रहता है और कुछ देशों में उनके निर्यात को प्रोत्साहित करने के लिए कम मूल्य की विनिमय दर प्रयोग करने की प्रवृत्ति बढ़ती है तो भारतीय निर्यात की प्रतिस्पर्धात्मकता पर दबाव बढ़ेगा। 6 मुद्राओं और 36 मुद्राओं के रीअर सूचकांक में अंतर का कारण 30 मुद्राओं के रीअर सूचकांक में देखा जा सकता है जिसमें 6 मुद्राएं (6 मुद्राओं के रीअर में शामिल) शामिल नहीं होती। 6 मुद्राओं के रीअर में शामिल 6 प्रमुख देशों के संबंध में भारतीय मुद्रास्फीति विभेद 30 मुद्राओं के सूचकांक में अन्य ईएमई की तुलना में अधिक था।

बाह्य ऋण

III.14 जून 2010 के अंत में भारत का बाह्य ऋण स्टॉक 273.1 बिलियन अमरीकी डॉलर था जिसने मार्च 2010

चार्ट III.6: आरईईआर तथा एनईईआर



के उसके स्तर की तुलना में 10.8 बिलियन अमरीकी डॉलर की वृद्धि दर्ज की थी जिसका मुख्य कारण अल्पावधि व्यापार कर्ज, ईसीबी और सरकार के बहुविध उधार में काफी वृद्धि होना था। प्रमुख अंतरराष्ट्रीय मुद्राओं के प्रति अमरीकी डॉलर में मूल्यवृद्धि से उभरे मूल्यन प्रभाव को छोड़कर, भारत का बाह्य ऋण 12.1 बिलियन अमरीकी डॉलर बढ़ा।

जून 2010 के अंत में, मूल अवधिपूर्णता पर आधारित कुल बाह्य ऋण में अल्पावधि ऋण का हिस्सा 21.2 प्रतिशत था जबकि शेष अवधिपूर्णता पर आधारित इसका हिस्सा 42.5 प्रतिशत था। प्रमुख ऋण स्थिरता संकेतक जून 2010 के अंत के सुविधाजनक स्तर पर बने रहे (सारणी III.8)।

अंतरराष्ट्रीय निवेश स्थिति

सारणी III.7: भारतीय रुपए की सांकेतिक और वास्तविक प्रभावी विनिमय दरें (व्यापार आधारित भारांक, आधार: 1993-94=100)

(प्रतिशत, मूल्यवृद्धि+/ मूल्यहास -)					
	सूचकांक अक्टूबर 22, 2010 अ	2008-09	2009-10	2009-10 (अप्रैल- अक्टू)	2010-11 (अप्रैल- अक्टू 22) अ
1	2	3	4	5	6
36-रीर	100.1	-13.6	13.2	4.4	0.4
36-नीर	88.3	-10.3	9.3	4.5	0.0
30-रीर	92.7	-6.9	4.1	1.3	-0.6
30-नीर	108.2	-2.6	2.7	1.2	0.3
6-रीर	118.1	-14.0	20.0	8.8	3.1
6-नीर	66.5	-14.8	10.2	3.5	-0.1
ज्ञापन:					
रु/अम.डालर	44.47	-21.5	12.9	8.5	1.5

नीर: सांकेतिक प्रभावी विनिमय दर।

रीर: वास्तविक प्रभावी विनिमय दर। अ: अनंतिम।

नोट: सूचकांक में वृद्धि रुपये की मूल्यवृद्धि और इसके विपरीत स्थिति विपरीत स्थिति का संकेत करती है।

III.15 2010-11 की पहली तिमाही के दौरान भारत की निवल अंतरराष्ट्रीय देयताएं 26.8 बिलियन अमरीकी डॉलर बढ़ी जिसका मुख्य कारण एफडीआई और संविभागीय निवेश के साथ व्यापार कर्ज के तहत निवल अंतर्वाहों में वृद्धि था। कुल बाह्य वित्तीय आस्तियां पिछली तिमाही की तुलना में जून 2010 के अंत में 5.3 बिलियन अमरीकी डॉलर कम होकर 373.6 बिलियन अमरीकी डॉलर रह गई जिसका कारण आरक्षित आस्तियों और व्यापार कर्ज में कमी आना था। मूल्यन हानि के कारण आरक्षित आस्तियों में 3.4 बिलियन अमरीकी डॉलर की गिरावट हुई जो प्रमुख अंतरराष्ट्रीय मुद्राओं के प्रति अमरीकी डॉलर में मूल्यवृद्धि दर्शाती है। निवल अंतरराष्ट्रीय वित्तीय देयताएं पिछली तिमाही की तुलना में जून 2010 के अंत

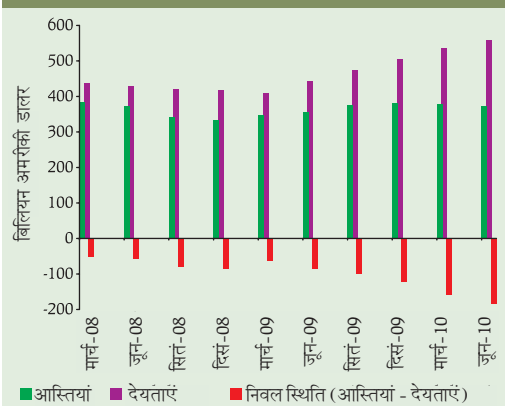
सारणी III.8: भारत का विदेशी ऋण

(बिलियन अमरीकी डॉलर)

	मार्च 2009 के अंत में	मार्च 2010 के अंत में आंस	जून 2010 के अंत में अ	घटबढ़ (मार्च 2010 की तुलना में जून 2010)	
				राशि	प्रतिशत
1	2	3	4	5	6
1. बहुपक्षीय	39.5	42.7	44.7	1.9	4.5
2. द्विपक्षीय	20.6	22.6	22.9	0.3	1.5
3. अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष	1.0	6.0	5.9	-0.1	-2.6
4. व्यापार क्रेडिट (1 वर्ष से अधिक)	14.5	16.9	17.6	0.7	4.2
5. बाह्य वाणिज्यिक उधार	62.4	72.0	74.5	2.5	3.5
6. अनिवासी भारतीय जमाराशियां	41.6	47.9	48.1	0.2	0.5
7. रुपया ऋण	1.5	1.7	1.6	-0.1	-4.4
8. रुपया ऋण (1 से 7)	181.1	209.8	215.3	5.4	2.6
9. अल्पकालिक	43.4	52.5	57.8	5.4	10.2
कुल (8+9)	224.5	262.3	273.1	10.8	4.1
(प्रतिशत)					
कुल ऋण / सकल देशी उत्पाद	20.5	18.9	-		
अल्पकालिक ऋण / कुल ऋण	19.3	20.0	21.2		
अल्पकालिक ऋण / भंडार	17.2	18.8	21.0		
रियायती ऋण / कुल ऋण	18.7	16.7	15.9		
भंडार / कुल ऋण	112.2	106.4	101.0		
ऋण चुकौती अनुपात	4.4	5.5	3.9		
-: अ: अनंतिम। अ: अनंतिम। आंस: आंशिक रूप से संशोधित।					

में 21.4 बिलियन अमरीकी डॉलर बढ़कर 558.6 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गई (चार्ट III.7)।

चार्ट III.7: भारत की अंतरराष्ट्रीय निवेश स्थिति



III.16 समग्र रूप से, भारत की भुगतान संतुलन स्थिति ने मजबूत देशी वृद्धि दर्शाई जो कि व्यापक चालू खाते के घाटे में दिख रही थी। भारत की तेज वृद्धि की संभावना और बढ़ते ब्याज दर विभेद ने भारी निवल पूंजी अंतर्वाहों को आकर्षित करने में सहायता की है जिसने चालू खाते के घाटे का वित्तपोषण किया। आगे, चालू खाते के घाटे की मात्रा पिछले वर्ष की तुलना में बढ़ सकती है क्योंकि भारत और विकसित देशों की वृद्धि संभावना के बीच अंतर बने रहने की संभावना है जो कि वर्ष के दौरान निर्यात वृद्धि आयात वृद्धि से कम रहने में दिखेगी। ईएमई को पूंजी प्रवाह की हाल की संभावना से पता चलता है कि यूरो क्षेत्र में सरकारी जोखिम की चिंताओं से उपजी अस्थायी

अनिश्चितता के बाद, ईएमई को पूंजी प्रवाह बढ़ेंगे। भलेही चालू खाते के घाटे का वित्तपोषण शायद कोई समस्या न हो, घाटे में संभाव्य वृद्धि से स्थिरता जोखिम की समस्या सामने आ सकती है। स्थिर चालू खाते का घाटा स्थिर

वृद्धि के लिए महत्वपूर्ण है और उच्च सकारात्मक मुद्रास्फीति विभेद भारतीय निर्यात की बाह्य प्रतिस्पर्धा पर दबाव का स्रोत होगा। इस प्रकार, मुद्रास्फीति को नियंत्रित रखना बाह्य संतुलन की स्थिति को सुधारने के लिए भी महत्वपूर्ण है।